अध्याय छः

निष्कर्ष एवं सुझाव।

६.१ प्रास्ताविक :

शिक्षा पध्दति में पाठयपुस्तक यह अध्ययन-अध्यापन में एक महत्वपूर्ण तथा अनिवार्य साधन माना जाता है। पाठयपपुस्तक का छात्रों के जीवन में गहराई से प्रभाव पडता है और पाठयपुस्तक के व्दारा होनेवाले संस्कार छात्रों को जीवन में चिरंतन होते है। पाठयपुस्तक के आशय की पूर्ति करने के लिए पाठयपुस्तक होना ही चाहिए। पाठयपुस्तक में छात्रों के मनोविज्ञान की दृष्टि से निर्दोष संरचना, संकल्पनाओं का स्पष्ट विवरन, उचित भाषा, स्वाध्याय, सार, उचित चित्र तथा आकृतियाँ इ. बातें गुणवत्तापूर्ण रहती हैं।

मुद्रणतंत्रज्ञान के अनुसार पाठयपुस्तक का निम्न १२ सोपान के दृष्टियों से अध्ययन किया जाता है।

१) लेखकों का निर्माण करना।
२) विचारार्थ हस्तलेख प्रस्तुत करना।
३) संपादकों का तज्ञों के साथ संपर्क होना।
४) हस्तलेख पे पुर्नविचार करना।
५) हस्तलेख प्रतिलिपी का संपादन करना।
६) हस्तलेख के स्वरुप का मुद्रण करना।
७) प्रामुद मुद्रण करना।
८) पुस्तक मुद्रण करना।
९) पुस्तक बंधाई।
१०) पुस्तक विज्ञापन करना।
११) पुस्तक वितरण करना।
१२) वाचकों को पुस्तक प्राप्त होना।

उपरोक्त १२ तंत्रो की मदद से मुद्रणतंत्रज्ञान का परीक्षण किया जाता है इनमें से किन तंत्रो की मुद्रणतंत्रज्ञान में कमी है उसकी खोज की जाती है। दर्जेदार पाठयपुस्तक निर्मिती के लिए मुद्रणतंत्रज्ञान मदद करता है।

पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार पाठयपुस्तक का निम्न छः दृष्टियों से अध्ययन किया जाता है।

१) पाठयपुस्तक का बाह्यांग।

२) मुद्रित अनुस्थापन/ मजमून की पहचान।

३) सामान्य उद्दिपक के लिए मुद्रित साहित्य।

४) गणितीय क्रिया।

५) वाचक के लक्षण।

६) वाचन फल।

उपरोक्त छः तंत्रो की मदद से पाठयपुस्तक का परीक्षण किया जाता है। गुणवत्तापूर्ण और दर्जेदार पाठयपुस्तक निर्मिती के लिए पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान मदद करता है।

पाठयपुस्तक की मदद से ही अध्यापक, छात्र तथा अभिभावकों के बिच शैक्षिक आदान-प्रदान होता है। कक्षा, कक्षा के बाहर पाठयपुस्तक द्वारा जादा मात्रा में अध्ययन होता है। इसलिए पाँचवी कक्षा के हिन्दी पाठयपुस्तक का मुद्रणतंत्रज्ञान और पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार परीक्षण करने का निर्णय शोध छात्र ने लिया। यह शोधकार्य प्रातिनिधिक तौर पर है। इस से अन्य कक्षाओं के पाठयपुस्तकों के लिए भी मार्गदर्शन मिल सकता है।

समस्या शब्दांकन :

"पाँचवी कक्षा के पाठयपुस्तक हिन्दी सुलभभारती का मुद्रणतंत्रज्ञान एवं पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार परीक्षण"

शोधकार्य के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोधकार्य के उद्देश्य निम्नानुसार है-

१) हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा के पाठयपुस्तक की मुद्रणतंत्रज्ञान के अनुसार जानकारी लेना।

२) हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा पाठयपुस्तक के बाह्यांग का परीक्षण करना।

३) हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा के मुद्रित अनुस्थापन का परीक्षण करना।

४) हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा के सामान्य उद्दिपक का परीक्षण करना।

५) हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा के गणितीय क्रिया का परीक्षण करना।

६) हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा के वाचक के लक्षणों का परीक्षण करना।

७) हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा के वाचन फल का जाँचकार्य करना।

८) हिन्दी सुलभभारती पाँचवी कक्षा का मुद्रणतंत्रज्ञान और पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के सिध्दान्तों के आधारपर मूल्यांकन करना।

शोधकार्य की पध्दति :

प्रस्तुत शोधकार्य वर्तमानकालीन समस्या के संदर्भ में होने के कारण इस के लिए सर्वेक्षण पध्दति अपनाई गयी है। क्यों कि इस पध्दति से विशिष्ट संदर्भ में वर्तमान स्थिती क्या है यह देखा जाता है।

शोधकार्य के साधन :

क्रमिक पाठयपुस्तक मुद्रित करने में महाराष्ट्र राज्य पाठयपुस्तक निर्मिती और अभ्यासक्रम संशोधन मंडल, पुणे, महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसलिए मुद्रण तंत्रज्ञान के संबंध में शाखा कोल्हापूर के मुख्य अधिकारी के द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी की है। अतः साक्षात्कार यह साधन प्रयुक्त किया है।

हिन्दी पाठयपुस्तक के अध्ययन अध्यापन में छात्र तथा अध्यापकों का गहरा संबंध होता है इसलिए पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान विषय संबंधी विविध अंगों के बारे में उनका निरीक्षण, अनुभव, अभिरुचि, विचार, दृष्टिकोन, क्या है यह जानने के लिए शोध छात्र ने प्रश्नावली यह साधन प्रयुक्त किया है। प्रश्नावली की विश्वासार्हता तथा सप्रमाणता जाँचने के बाद उनका प्रयोग छात्र तथा अध्यापकों के लिए किया गया। पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के चार तंत्रों पर २३ प्रश्न छात्रों के लिए रखी गयी प्रश्नावली में सम्मिलित किए गए। पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के सभी सिध्दान्तों पर ६१ प्रश्नों की प्रश्नावली अध्यापकों के लिए तैयार की गयी।

जनसंख्या तथा न्यादर्श चयन -

प्रस्तुत शोधकार्य के संबंध में होनेवाली जनसंख्या से तात्पर्य यह है कि महाराष्ट्र राज्य पाठयपुस्तक निर्मिती और अभ्यासक्रम संशोधन मंडल, पुणे, तथा पन्हाला तहसील में स्थापित सब अनुदान प्राप्त हाईस्कूल। इस क्षेत्र में कुल २८ हाईस्कूल हैं। उनमें से ३२ प्रतिशत (नौं) हाईस्कूल यादृच्छिक पध्दती अपनाकर चुने गए। इस विषय का अध्यापन करनेवाले कुल २८ अध्यापकों में से ३४ प्रतिशत (दस) अध्यापक शोधकार्य के लिए उपयुक्त पध्दति से चुने गए। छात्रों का चयन करते समय पन्हाला तहसील में स्थापित हाईस्कूलों में पाँचवी कक्षा में पढनेवाले कुल १९८८ छात्रों में से २१ प्रतिशत (४२४) छात्र यादृच्छिक पध्दति अपनाकर चुने गए। इन्होने प्रश्नावली के लिए दी प्रतिक्रियाओं के आधार पर अन्वयार्थ लगाकर निष्कर्ष निकाले गए है।

शोधकार्य में विद्यार्थी प्रश्नावली और शिक्षक प्रश्नावली द्वारा प्राप्त हुई जानकारी का वर्गीकरण विश्लेषण करकर निष्कर्ष निकाले गए है।

६.२ मुद्रण तंत्रज्ञान के बारे में प्राप्त जानकारी : निष्कर्ष :

अध्याय पाँच में मुद्रणतंत्रज्ञान के बारे में जो तुलनात्मक विश्लेषण बताया है, उसके आधार पर महाराष्ट्र राज्य पाठयपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडल, पुणे निम्नांकित ८ सोपान को मुद्रण तंत्रज्ञान में अपनाता है।

१. हस्तलेख निर्माण करता है।

२. उचित हस्तलेख नियुक्त करता है।

३. नमुना नकल तयार करता है।

४. नमुना नकल मुद्रित करता है।

५. पुस्तक मुद्रण करता है।

६. पुस्तक बंधाई करता है।

७. पुस्तक वितरण करता है।

८. वाचकों को पुस्तक प्राप्त करके देता है।

६.३ हिन्दी पाठयपुस्तक के बारे में छात्रों का दृष्टिकोन : निष्कर्ष :

अध्याय पाँच में छात्रों द्वारा संकलित प्रश्नावली का वर्गीकरण और विश्लेषण से ज्यों अन्वयार्थ लगाया गया है यह वर्गीकरण सारणी क्र. ५.१ से ५.२० तक की सारणियों में दिखाई देता है। इसके आधार पर निम्नानुसार निष्कर्ष निकलते हैं।

छात्रों के लिए तैयार की गयी प्रश्नावली में पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के चार अंगों के प्रश्नों का समावेश किया गया था। वे चार अंग तथा उनके निष्कर्ष निम्नानुसार हैं -

निष्कर्ष

१.	पाठयपुस्तक का बाह्यांग	-	हिन्दी पाठयपुस्तक का आकार हात से पकड़ने के लिए सुलभ लगता है। पाठयपुस्तक के लिए प्रयुक्त किया गया कागज़ का दर्जा योग्य है। पाठयपुस्तक की जिल्द पक्की है। पाठयपुस्तक का आवरण पृष्ठ आकर्षक है।
२.	मुद्रित अनुस्थापन		पाठयपुस्तक के पंक्तियों की लंबाई उचित है। अक्षरों का मुद्रण टाईप योग्य है।

निष्कर्ष

		पाठयपुस्तक में दो पंक्तियों, शब्दों, परिच्छेदों में रखा अंतर उचित है। पाठयपुस्तक का मजमून क्रमबध्द और अर्थपूर्ण है।
३.	गणितीय क्रिया	पाठयपुस्तक का आशय शब्द स्पष्टता से पढ़ने योग्य है। पाठयपुस्तक के वाक्यों का पृथःकरण आसानी से किया जा सकता है। पाठयपुस्तक का लिखित मजमून बोलचाल की भाषा में रुपांतरित किया जा सकता है। पाठयपुस्तक का मजमून पढ़ने पर संवेदना जागृत होती है। पाठयपुस्तक का आशय पढ़ने पर विविध विचार लहरें मन में उठती है। छात्रों का हिन्दी पाठयपुस्तक के पाठों के बारे में पूर्वज्ञान है। पाठयपुस्तक की नव संकल्पनाएँ वे समझ सकते है। पाठयपुस्तक में से चुने गए परिच्छेद के लिए उचित शीर्षक दिए जाते है। पाठयपुस्तक की जानकारी से निष्कर्ष निकाले जा सकते है।
४.	वाचक के लक्षण	पाठयपुस्तक के रिक्त स्थानों की उचित शब्द चुनकर वाक्य पूर्ति करता है। पाठयपुस्तक के पाठ पढ़ने पर उचित आशय ध्यान में रखा जाता है। पाठयपुस्तक का मजमून सहजता से ध्यान में रखने योग्य है।

६.४ हिन्दी पाठयपुस्तक के बारे में अध्यापकों का दृष्टिकोनः निष्कर्ष :

अध्याय पाँच में अध्यापकों से प्रश्नावली द्वारा प्राप्त हुई जानकारी कां विश्लेषण करने पर पाठयपुस्तक के बारे में निम्न निष्कर्ष निकलते हैं।

निष्कर्ष

१.	पाठयपुस्तक का बाह्यांग	हिन्दी पाठयपुस्तक का आकार हात में पकड़ने के लिए योग्य है। पाठयपुस्तक में पृष्ठ संख्या योग्य है। हिन्दी पाठयपुस्तक के कागज़ का दर्जा अच्छा है। हिन्दी पाठयपुस्तक की बंधाई मजबूत है। पाठयपुस्तक का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। पाठयपुस्तक का शीर्षक पृष्ठ परिपूर्ण है। पाठयपुस्तक की किमत उचित है। पाठयपुस्तक में गद्य-पद्य वर्गीकरण के अनुसार पाठों का विभाजन पर्याप्त है। हिन्दी पाठयपुस्तक की प्रस्तावना पुस्तक के लिए योग्य है। पाठयपुस्तक में आरंभिक जानकारी उचित है।
२.	मुद्रित अनुस्थापन	पाठयपुस्तक में पंक्तियों की लंबाई है सो सही है। पाठयपुस्तक में अक्षरों का टाईप पढ़ने योग्य है। हिन्दी पाठयपुस्तक में दो पंक्तियों, परिच्छेदों, शब्द आदि में छोडा अंतर उचित है। हिन्दी पाठयपुस्तक की छपाई कलात्मक है। हिन्दी पाठयपुस्तक में हर पृष्ठ पर छोडा हाशिया योग्य है। पाठयपुस्तक का संपूर्ण अभिकल्प परिपूर्ण है। पाठयपुस्तक के पाठों का क्रम और अर्थपूर्णता उचित है।

निष्कर्ष

		पाठयपुस्तक में पाठों के परिच्छेदों का आशय अलग-अलग है।
३.	सामान्य उद्दिपक	हिन्दी पाठयपुस्तक में गद्य-पद्य विभाजन पर्याप्त है। पाठयपुस्तक का हर पाठ पूर्णत्व की कसौटी पर खरा उतरा है। पाठयपुस्तक के पाठों में अचूकता है। पाठयपुस्तक के पाठ भाषाध्यापन के उद्देश्यों की पूर्ति करते है। पाठयपुस्तक में विषय प्रतिपादन के लिए की शब्दरचना समझनेवाली है। पाठयपुस्तक में पाठों का आशय संघटन सुयोग्य है।
४.	गणितीय क्रिया	पाठों की रचना निर्दोष है। पाठों का मजमून पढ़ते समय सहजता से ध्यान में आता है। पाठयपुस्तक के मुद्रित मजमून का बोलचाल की भाषा में रुपांतरण हो सकता है। पाठयपुस्तक के पाठों का पृथःकरण करना आसान है। पाठयपुस्तक का मजमून प्रतिपादन करने योग्य है। पाठयपुस्तक के पाठ सहजता से समझाने योग्य है। पाठयपुस्तक के पाठों का संबंध अर्थपूर्ण होता है। पाठयपुस्तक में भाषा संबंधी नियम तत्वों का ध्यान रखा गया है। पाठयपुस्तक का आशय संघटन पर्याप्त है। पाठयपुस्तक के सामान्य तत्वों का आकलन होता है।

निष्कर्ष

हिन्दी पाठयपुस्तक में विरामचिह्नों का सही प्रयोग हुआ है।

पाठयपुस्तक में चित्र, आकृति, इ. का होना निहायत जरुरी है।

हिन्दी पाठयपुस्तक में आगमन तथा निगमन पध्दति के तत्वों का पालन किया है।

पाठयपुस्तक के पाठों के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी है।

हिन्दी पाठयपुस्तक की संकल्पनाओं का आकलन होता है।

पाठयपुस्तक के परिच्छेदों को शीर्षक दिया जा सकता है।

पाठयपुस्तक के परिच्छेदों का एक तिहाई सार लिखा जा सकता है।

पाठयपुस्तक के जानकारी से निष्कर्ष निकालना आसान है।

पाठयपुस्तक में मूल्यांकन के लिए प्रश्न पर्याप्त है।

५. वाचक के लक्षण -

पाठयपुस्तक के गद्य पाठों का वाचन करते समय समग्र पध्दति अपनायी जाती है।

पाठयपुस्तक के पद्य पाठों का वाचन करते समय समग्र पध्दति अपनायी जाती है।

पाठयपुस्तक के पाठ पढ़ने पर संवेदना निर्माण होती है।

हिन्दी पाठयपुस्तक में आयी जटिल वाक्यरचना पहचानी जा सकती है।

पाठयपुस्तक के पाठक का वाचन करते समय खास आशय ध्यान में रखा जा सकता है।

concerned persons.

निष्कर्ष

		पाठयपुस्तक का मजमून पढ़ने से सहजता से ध्यान में आता है।
६.	वाचन फल	पाठयपुस्तक पढ़ने पर बोधात्मक क्षेत्र में वाचन फल दिखायी देता है। पाठयपुस्तक पढ़ने पर भावात्मक क्षेत्र में वाचन फल दिखायी देता है। पाठयपुस्तक पढ़ने से क्रियात्मक क्षेत्र में वाचन फल दिखायी देता हे।

६.५ सूझाव -

प्रस्तुत शोध कार्य में साक्षात्कार और प्रश्नावली के द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाओं का वर्गीकरण, विश्लेषण किया गया है। उसी के आधार पर अन्वयार्थ लगाया गया है। अन्वयार्थ पर आधारित सूझाव निम्नानुसार हैं -

१. क्रमिक पाठयपुस्तक मुद्रित करते समय महाराष्ट्र राज्य पाठयपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडल पुणे, इन्होने कोबायशीजी ने बताए हुए १२ सोपान के अनुसार पाठयपुस्तक निर्माण करना चाहिए।

२. हिन्दी भाषा का पाठयपुस्तक की बँधाई और भी मजबूत होनी चाहिए।

३. हिन्दी विषय का अध्यापन करने का मौका, जिनकी बी.एड्. उपाधि के लिए हिन्दी यह विशेष अध्यापन पध्दति तथा उच्च शिक्षा के लिए हिन्दी विषय चुना है, ऐसे अध्यापकों को देना चाहिए।

४. पाठयपुस्तक में और भी आवश्यकता के नुसार चित्रों की संख्या बढ़ानी चाहिए।

५. आधुनिक तंत्रज्ञान के द्वारा अलग-अलग अक्षरों के टाईप प्रयुक्त किए जाने चाहिए।

६. हिन्दी पाठयपुस्तक में पाठ कं अंत में प्रयुक्त कठिन शब्दार्थ बढ़ाने चाहिए।

७. देश प्रेम पर आधारित कविताओं की संख्या बढ़ानी चाहिए।

८. वास्तववाद पर आधारित पाठों का समावेश पाठयपुस्तक में होना चाहिए।

९. छात्रों में संभाषण कौशल बढ़ाने के लिए एक से सौ तक अंक देने चाहिए।

१०. पाठयपुस्तक में पाठों के अंत में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की संख्या बढ़ाई जाय।

११. पाँचवी के हिन्दी पाठयपुस्तक में मानव शरीर के अवयवों के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

१२. पाठ में दिया जानेवाला उपदेश रंगीन टाईप में पाठ के प्रारंभ में दिया जाय।

१३. पाठयपुस्तक के संबंध में हुए नये शोधकार्य, छात्रों की आवश्यकताएँ, अध्यापकों की कठिनाईयाँ इन बातों का सूक्ष्मता से और गहराई से अवलोकन करें और पाठयपुस्तक का निर्माण किया जाय।

१४. पाठयपुस्तक यह अध्यापन का साधन है, साध्य नहीं है। यह बात ध्यान में रखकर पाठयपुस्तक द्वारा ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक उद्देश्यों की पूर्ति होनी चाहिए।

६.६ शोधकार्य के लिए कुछ विषयों की ओर निर्देश -

प्रस्तुत अध्याय के अभी तक के हिस्से में शोधकार्य के निष्कर्ष एवं सुझाव दिए गए है। प्रस्तुत शोधकार्य करते समय शोधकर्ता को इस क्षेत्र में और कुछ समस्याएँ महसूस हुई। उन समस्या की ओर शोधकर्ता ने गहराई के साथ नहीं देखा क्यों कि वो समस्याएँ शोधकार्य से संबंधित नहीं थी। फिरभी यदि उन समस्याओं का अध्ययन किया गया तो प्रस्तुत समस्या के सर्वांगिण तथा सम्यक आकलन के लिए उपादेय सिध्द होगा। इस दृष्टिकोन से निम्न परिच्छेदों में उन समस्याओं की ओर निर्देश किया गया।

१. प्रस्तुत शोधकार्य पन्हाला तहसील में स्थापित अनुदानप्राप्त हाईस्कूलों तक सिमित है। उसी के साथ साथ कोल्हापूर जिला क्षेत्र चुनकर प्रस्तुत समस्या पर अध्ययन हो जाना चाहिए जिससे यह अध्ययन अधिकाधिक निर्दोष तथा उपयुक्तता की दृष्टि से लाभदायी होगा।

२. प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक सभी कक्षाओं के हिन्दी पाठयपुस्तकों का मुद्रणतंत्रज्ञान एवं पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार परीक्षण होना चाहिए।

३. हिन्दी का अध्ययन अधिकाधिक प्रभावशाली एवं मनोरंजक होने के लिए पाठयपुस्तक के साथ-साथ अन्य दृक-श्रवण साधनों का कैसे उपयोग करें? इसका चिकित्सक अध्ययन होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

हिन्दी :

केणी स.रा. और कुलकर्णी ह. कृ. हिन्दी की अध्यापन पध्दति, पुना : व्हीनस प्रकाशन(१९७३).

पठाण नसिमा, हिन्दी विषयज्ञान, सोलापूर : सु.अ.काले पब्लिशर्स (१९८८).

पंडित बा.बि., हिन्दी अध्यापन, पुणे : नूतन प्रकाशन, प्रथमावृत्ति (१९९०).

पांडेय रामशूकल, हिन्दी शिक्षण, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर (१९९१).

भाटिया एम्.एम्. नारंग सी.एल. आधुंनिक हिन्दी शिक्षण विधियाँ, लुधियानाः प्रकाश ब्रदर्स (१९७८).

संत दु. का., शोध विज्ञान कोश, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन (१९९६).

वास्कर आनंद, वास्कर पुष्पा, आशयुक्त अध्यापन पध्दति, पुनाः मेहता पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण (१९९५).

मराठी -

अकोलकर ग.वि., पाटणकर ना.वि., मराठीचे अध्यापन पुणेः व्हिनस प्रकाशन, १९७०.

कुलकर्णी शरद, जोशी अनंत व इतर (संपादक), शैक्षणिक तंत्रविज्ञान मराठी परिभाषा सूची, प्रथमावृत्ती, कोल्हापूर : महाराष्ट्र शैक्षणिक परिषद, दक्षिण महाराष्ट्र १९९०.

दांडेकर वा.ना., शैक्षणिक मूल्यमापन व संख्याशास्त्र, तृतीय आवृत्ती, पुणे : श्री विद्या प्रकाशन, १९८९.

देशपांडे वि.भा., तावरे स्नेहल (संपादक) मराठी भाषा आणि साहित्य, प्रथमावृत्ती, पुणे : मेहता प्रकाशन हाउस, १९८०.

पाटील लिला, आजचे अध्यापन, द्वितीय आवृत्ती, पुणे : श्री विद्या प्रकाशन, १९७८.

पाटील लिला, मराठीचे अध्यापन व मूल्यमापन, पुणे : श्री विद्या प्रकाशन, १९७८.

बापट भा.गो., शैक्षणिक संशोधन, पुणे : नुतन प्रकाशन, १९८६.

नियतकालिक :

शिक्षण संक्रमण :

बोकिल श्री.र. पाठयपुस्तकाची निर्मिती प्रक्रिया आणि स्वरुप, डिसेंबर, १९८७.

ENGLISH :

Armbruster B.B., Anderson T.H. Text book Analysis in Torsten H.T. (Ed). The International Encyclopedia of Education, Oxford Pergaman Press, 1984.

Best John W. Research in Education, Fourth Edition, New Delhi : Prentice Hall of India Private Limited, 1983.

Buch M.B., The Survey of Research in Education, Baroda : Centre of Advanced Study Education, The M.S. University, Baroda.

Buch M.B., (Ed.) Third All India Educational Survey, New Delhi : N.C.E.R.T., 1978.

Good C.V., Dictionary of Education, MacGraw Hill Book Co., 1945.

Husen Torsten, Postleth Waite T., Neville (Ed.). The International Encyclopedia of Educational Research and Studies Volume (D.E.) Oxford : Pergaman Press, 1985.

Maheshwari D.P., Text Books Planning, Peratparation Publication, Allahabad : Vora and Co. Publishers Pvt. Ltd., 1966.

NCERT, Fourth All India Educational Survey, New Delhi, NCERT 1982.

NCERT, Educational Investigations in Indian Universities, New Delhi by the Council.

NCERT, Third India Year Book of Educational Research, New Delhi.

Thomas R.M. and Kobayashi V.N., Educational Technology, It's Creation Development and Cross, Cultural Transfer Volume 4, New York : Pergaman Press, 1987.

Yeole C.M., Print Media and Text Technology, 1997.